चौटाला खानदान की नूरा कुश्ती...

मांग रहे हैं कुछ सवालों के जवाब

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

रोहतक: चौटाला खानदान में चल रही उठापटक को लेकर हरियाणा के लोगों के मन में तरह-तरह के सवाल उठ रहे हैं...ये सवाल विश्लेषण मांग रहे हैं....हरियाणा में सबसे बड़ा राजनीतिक खानदान बिखरने की कगार पर है। या तो इनैलो दो टुकड़े हो जाएगी या फिर हरियाणा के फलक पर नई राजनीतिक शक्ति या दल का उदय होगा। यह दल हरियाणा में उस कोने को भर सकता है, जहां साफसुथरी राजनीति की लोग उम्मीद पाले हुए हैं।

लेकिन उससे पहले इन सवालों का जवाब आखिर कौन देगा... क्या परिवार की यह लड़ाई एक नूरा कुश्ती है जो अगले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मदद पहुंचाने के लिए की जा रही है और बदले में चौटाला खानदान अपनी सजा माफी की कवायद में जुटा हुआ है...

क्या यह लड़ाई जाट वोट बैंक का ध्यान पूरी तरह अपनी तरफ खींचने और कांग्रेस के पाले में जाटों को जाने से रोकने के लिए हो रही है। क्योंकि अभय के मुकाबले अजय चौटाला अपेक्षाकृत साफ सुथरी छवि के माने जाते हैं इसलिए प्रदेश के जाट वोट बैंक को पूरी तरह उनकी तरफ सहानुभूति पैदाकर ढकेल दिया जाए। ...

क्या कोई पिता अपने दोनों बेटों की राजनीति का बंटवारा इस तरह करता है कि एक बेटे को वह अपनी पूरी राजनीतिक विरासत सौंप दे और दूसरे को कुछ न दे। ऐसा तो शाहजहां ने भी नहीं किया था। उसने औरंगजेब और दाराशिकोह को बराबर की सत्ता सौंपी थी लेकिन औरंगजेब ने पिता को जेल में डाल दिया और दाराशिकोह की हत्या कर दी...

अभी तक ओमप्रकाश चौटाला द्वारा की गई सारी कार्रवाई बचाव में की गई कार्रवाई लग रही है। अजय चौटाला और उनके बेटे दुष्यंत और दिग्विजय बराबर अभय चौटाला और अप्रत्यक्ष रूप से ओम प्रकाश चौटाला को चुनौती दे रहे हैं। 17 नवंबर को इंडियन नैशनल लोकदल (इनैलो) की कार्रकारिणी बैठक बुलाने की पहल अजय चौटाला ने जेल से परोल से बाहर निकलने पर की। इसके बाद अभय ने भी पार्टी की कार्यकारिणी रख दी। उन्होंने सारे विधायकों और सांसदों को चंडीगढ़ बुलाया और उन्हें अब कैद करके परवानु के एक होटल में रखा गया है। इसे आसानी से समझा जा सकता है कि जींद में अजय द्वारा बुलाई गई बैठक में कोई विधायक नहीं पहुंच सके।

भाजपा को लेकर शक क्यों

चौटाला खानदान की लड़ाई से भाजपा को फायदा पहुंचाने की बात इसलिए कही

जा रही है कि अभी तक न तो ओम प्रकाश चौटाला ने और न अभय चौटाला ने और न ही अजय चौटाला ने भाजपा की उस तरह किसी भी मौके पर निंदा नहीं की जिस तरह एक विपक्षी दल सत्तारूढ़ दल के खिलाफ खुलकर बयान देता है और आंदोलन छेड़ता है। अभी तक सत्तारूढ़ भाजपा की नाक में दम करने वाला एक भी आंदोलन इनैलो की तरफ से नहीं छेड़ा गया। ऐसे तमाम मुद्दे आए जिन पर इनैलो को सामने आकर खड़ा होना चाहिए था लेकिन दोनों गुट नदारद रहे। हाल ही में हरियाणा रोडवेज कर्मचारियों का लंबा आंदोलन चला और जो अभी भी जारी है लेकिन उसे लेकर इनैलो या दोनों गुट के नेताओं ने समर्थन देने की कोई बात नहीं की।

फरीदाबाद से विधायक नागेंद्र भड़ाना खुलकर भाजपा के कार्यक्रमों में शामिल होता है और मोदी को अपना नेता मानता है। लेकिन अभी तक न तो पार्टी आलाकमान ओमप्रकाश चौटाला ने कोई कार्रवाई की और न ही दोनों गुट में से किसी एक गुट ने इस विधायक को पार्टी से निकालने की मांग की है।

इसे इस खानदान की नूरा कुश्ती क्यों न माना जाए कि इनकी आपसी लड़ाई से हरियाणा में विपक्ष की ताकत कमजोर हो रही है और विशेषकर जाट मतदाताओं के सामने धर्मसंकट की स्थिति पैदा हो गई है। अगर इस खानदान की लड़ाई चुनाव तक बरकरार रहती है तो जाट वोट तीन हिस्सों में बंटेगा, दो हिस्से इनके पास रहेंगे और एक हिस्सा कांग्रेस को जाएगा। जाहिर है कि इसका सीधा फायदा भाजपा को होगा। क्योंकि हरियाणा का जाट इस वक्त अगर किसी से सबसे ज्यादा नाराज है तो वह हरियाणा सरकार है। भाजपा को जाटों का एक भी वोट अगले चुनाव में नहीं मिलने वाला। ऐसे में भाजपा की तरफ से इनैलो लीडरशिप को क्या इशारा नहीं किया जा सकता कि आप लोग भी मुलायम खानदान की तरह लड़ो ताकि हम यूपी की तरह फिर से विजय पताका फहरा सकें।

यह ओमप्रकाश चौटाला की भूल है

अगर यह लड़ाई ओमप्रकाश चौटाला ने जाटों की सहानुभूति पाने, कांग्रेस की तरफ जाटों को जाने से रोकने और इनैलो को राष्ट्रीय राजनीति में चर्चा में लाने के लिए छेड़ी है तो भी उनकी बहुत बड़ी भूल है। इससे जाटों की सहानुभूति मिलने से रही और वे कांग्रेस के पाले में लौटने को मजबूर होंगे क्योंकि जाटों को अब अपनी चौधर बचाने के लिए कांग्रेस के पाले में जाने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होगा। अभी तो उनके पास इनैलो और कांग्रेस के रूप में दो विकल्प हैं। हालात ये हैं कि अभी चुनाव अगर हो जाएं तो हरियाणा में कांग्रेस का पलड़ा इनैलो से भारी है और भाजपा का ग्राफ लगातार नीचे ही जा रहा है।

ओम प्रकाश चौटाला को अब यह समझना होगा कि हरियाणा में लोग अब देवीलाल के समय के नहीं रहे। बड़ी तादाद में युवा मतदाता पुराने लोगों की जगह ले चुके हैं। गांवों और कस्बों में अजय चौटाला के बेटों दुष्यंत और दिग्विजय के साथ बड़ी तादाद में युवक जुड़े हुए हैं। ये युवक न तो अभय के साथ जाने को तैयार हैं और न हीं अजय के साथ। अजय इस बात को समझ रहे हैं, तभी उन्होंने स्टूडेंट्स के बीच इनसो खड़ा करके कमान अपने बेटों को सौंप दी थी। इस वक्त इनसो समर्थकों की बहुत बड़ी तादाद कॉलेज और यूनिवर्सिटियों में मौजूद है। वे अभय या ओमप्रकाश चौटाला के समर्थन में कभी नहीं आएंगे। चौटाला को करना यही चाहिए था कि वह पार्टी की बागडोर भावी पीढ़ी को सौंप कर खुद सलाहकार की भूमिका में आ जाते। वैसे भी उनके ऊपर भ्रष्टाचार के जो गंभीर आरोप रहे हैं और जिनमें वो दोषी साबित भी हो चुके हैं, उसे देखते हुए हरियाणा के पढ़े लिखे लोग ओमप्रकाश चौटाला को तो वोट नहीं देंगे।

जिस गोहाना रैली को अजय चौटाला और उनके बेटों पर कार्रवाई का आधार बनाया गया, उसमें छिपे संकेत भी ओम प्रकाश चौटाला नहीं पहचान सके। उस रैली में हुआ यह था कि वहां युवक चौटाला के सामने सीटी बजा रहे थे और दुष्यंत और दिग्विजय की जयजयकार कर रहे थे। इसमें आखिरी बुराई क्या थी। यह तो किसी भी राजनीतिक रैली में एक सामान्य सी घटना थी। इससे यह भी पता चल रहा था कि उनके पोते युवा मतदाताओं में कितने लोकप्रिय हो चुके हैं। यह उनके लिए खुशी की बात होनी चाहिए थी लेकिन इसे उन्होंने अनुशासनहीनता मान लिया।

ओमप्रकाश चौटाला को शायद अपना अतीत अच्छी तरह याद होगा, जब उन्होंने अपने बाप चौधरी देवीलाल के सामने पार्टी और सत्ता पर कब्जा कर लिया था। देवीलाल के दूसरे बेटे रणजीत पूरी तरह नाकाम हो गए थे। यही हालात अब फिर से हैं। ओमप्रकाश चौटाला को अपने ही इतिहास से सबक लेते हुए, हालात को इस मोड़ तक नहीं लाना चाहिए था कि उन्हीं के दो बेटों में उनके सामने सत्ता के लिए ऐसा संघर्ष को हो कि पार्टी की सारी साख को मिट्टी पलीत हो जाए। चौटाला के दोनों बेटे अजय और अभय की खूबियों को इस्तेमाल कर इनैलो को आसानी से बड़े मुकाम तक पहुंचाया जा सकता था लेकिन ओम प्रकाश की कमजोरी कहें या अभय के दबंगपन ने उन्हें बेवकूफी वाले फैसले लेने पर मजबूर किया। अगर इनैलो दो फाड़ होती है या अजय चौटाला अपनी अलग पार्टी खड़ी करते हैं तो यह ओमप्रकाश चौटाला की ही नाकामी मानी जाएगी। यह समझ से बाहर है कि राजनीतिक रूप से कोई परिपक्व पिता ऐसा कैसे होने दे रहा है।

क्या अजय चौटाला उम्मीद की किरण हैं

हरियाणा की राजनीति में क्या अजय चौटाला और उनके दोनों बेटों दुष्यंत और दिग्विजय को उम्मीद की कोई किरण माना जाए।...यह कहना या ऐसे नतीजे पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। दुष्यंत और दिग्विजय के पक्ष में बस एक ही बात जा रही है कि दोनों साफसुथरी छवि के हैं। लेकिन दोनों ही एक छंटे हुए परिवार से आते हैं यानी अगर स्वार्थों की बात आएगी तो दोनों और अजय चौटाला भाजपा का या कांग्रेस का दामन पकड़ने में जरा भी देर नहीं लगाएंगे। इसलिए इस गुट का कड़ा इम्तेहान बाकी है। आने वाले वक्त में जो एजेंडा यह गुट सामने लाएगा, उसी के आधार पर फैसला होगा कि इन्हें उम्मीद की कोई रोशनी माना जाए या नहीं। पार्टी का बंटना या नई पार्टी का बनना तय है। इन दोनों चीजों में से किसी एक फैसले का पब्लिक को इंतजार है। अगर अजय चौटाला नई पार्टी का ऐलान करते हैं और जो कि बहुत मुमकिन लग रहा है, तो उसके कारगर होने का पूरा दारोमदार हरियाणा के लोगों पर होगा। लेकिन हरियाणा के लोग चौटाला खानदान को लेकर जल्दबाजी में कोई फैसला न लें। यह हरियाणा की भावी राजनीति की दिशा तय करने वाला फैसला होगा।

अजय : 9 दिसम्बर को नई पार्टी, चश्मा त्याग दिया

जींद में अजय चौटाला ने कार्यकर्ताओं की सभा में 9 दिसम्बर तक नई पार्टी बनाने का ऐलान कर दिया और इनेलो के पुराने चुनाव चिन्ह चश्मे का भी त्याग कर दिया। हजारों कार्यकर्ताओं की भीड़ में ऐलान करते हुए शनिवार को उन्होंने पिता ओमप्रकाश चौटाला के इंडियन नेशनल लोकदल से स्वयं को निष्कासित मान लिया।

उधर चण्डीगढ़ में अभय चौटाला द्वारा बुलाई गई समानान्तर बैठक में 12 विधायक और 2 सांसद समेत, 4 को छोड़कर पार्टी के सभी जिला अध्यक्ष भी शामिल हुए।

9 दिसम्बर को नई पार्टी के एलान को लेकर कयास यह लगाये जा रहे हैं कि अजय को अभी किसी समझौते की आशा है। इस बीच यदि समझौता नहीं हो पाता तो नई पार्टी का एलान कर दिया जायेगा।

चिकित्सा सुविधा नहीं 20 लाख के लिये भी, बातें हैं 50 करोड़ तक पहुंचने की

फ़रीदाबाद (म.मो.) चुनावी वर्ष में जनता को मूर्ख बनाने के लिये भारतीय जुमला पार्टी के जुमलेबाज पीएम नरेन्द्र मोदी ने एक लोक लुभावना नारा दिया 'आयुष्मान भारत' का। इसके तहत देश भर के 50 करोड़ अति गरीब एवं पिछड़े लोगों को 5 लाख तक इलाज मुफ्त कराने का दावा किया है। जबकि परिस्थितियां इसके बिल्कुल विपरीत हैं तथा इन परिस्थितियों में सुधार के भी कोई आसार नजर नहीं आ रहे।

करीब 20 लाख की आबादी वाले इस औद्योगिक शहर में करीब ढाई लाख परिवार तो उन श्रमिकों के हैं जो चिकित्सा सुविधा के नाम पर अपने वेतन का साढ़े छह प्रतिशत ईएसआई कार्पोरेशन को देते हैं। इनके लिये सरकार यानी कार्पोरेशन ने दी अस्पताल व कुछ डिसपेंसरियां खोल रखी हैं। साधन सम्पन्न लोगों के लिये दर्जनों छोटे बड़े निजी अस्पताल है। शेष बची गरीब जनता जिसके पास कोई संसाधन नहीं है, हरियाणा सरकार ने बीके अस्पताल व कई अन्य छोटे-बड़े चिकित्सा केन्द्र खोल रखे हैं। गर्भवती महिलाओं के लिये अनेकों डिलिवरी हट अतिरिक्त रूप से खोल रखे हैं। इन सबके लिए सरकार ने इमारतें तो खड़ी कर दीं परन्तु उनमें काम करने को डाक्टर व अन्य स्टाफ नाममात्र को ही है। कुछ इमारतें तो ऐसी भी खड़ी है जिनमें आज तक स्टाफ की नियुक्ति ही नहीं हुई। केवल इमारत की रखवाली के लिए चौकीदार को रखा हुआ है।

उन बड़ी एवं गंभीर बीमारियों की बात तो छोड़िये जिनमें विशेषज्ञ डाक्टरों एवं महंगे उपकरणों की आवश्यकता होती है, साधारण एवं नॉर्मल डिलिवरी तक का पर्याप्त प्रबंध यहां नहीं है। शायद ही कोई सप्ताह ऐसा जाता होगा जब किसी न किसी गर्भवती महिला की डिलिवरी किसी डिलिवरी हट के दरवाजे बीके अस्पताल के दरवाजें या शौचालय में न होती हो। कई बार इन अस्पतालों द्वारा डिलीवरी हेतु आई महिलाओं को इधर से उधर रैफर करने के चक्कर में, बीच सड़क चलते ऑटों में भी हो जाती हैं। लापरवाही का आलम यह है कि डिलीवरी टेबल से नवजात शिशु सीधे नीचे पड़े डस्टबिन में ही गिर जाता है। हर मामले की जांच का आश्वासन दिया जाता है लेकिन जांच पूरी तो क्या शुरू होने से पूर्व ही अगला कांड हो जाता है।

इसी सप्ताह सैक्टर 21डी में प्रात: 4.00 बजे डिलिवरी हेतु आई महिला के लिये डिलिवरी हट के भीतर सोये कर्मचारी ने दरवाजा ही नहीं खोला। बहुत दरवाजा पीटने पर जब दरवाजा खुला तब तक सड़क पर ही डिलीवरी हो चुकी थी। शुक्र यह रहा कि जच्चा-बच्चा नार्मल है। शिकायत मिलने पर सिविल सर्जन ने जांच की नाटकीय भरोसा देने की बजाय साफ कहा कि स्टाफ की कमी है जिसे पूरा करने का वे प्रयास करेंगे। समझने वाली बात यह है कि इस तरह के मामलों में डाक्टरों की कोई बहुत ज्यादा आवश्यकता नहीं होती, केवल नर्स अथवा दाई से भी काम चल सकता है लेकिन पांच लाख तक की चिकित्सा सुविधा देने का जुमला छोड़ने वाली जुमलेबाजों की सरकार पर्याप्त मात्रा में पैरा मैडिकल स्टाफ भी भर्ती नहीं करना चाहती।

बल्लभगढ़ मेट्रो का खेल: पूरे प्रशासन की बनी है रेल

फ़रीदाबाद (म.मो.) वाईएमसीए से बल्लभगढ़ तक करीब तीन किलोमीटर के मार्ग पर मेट्रो रेल चलने को तैयार है पिछले एक करीब माह से। परन्तु देश के पीएम को इस कद्दू में तीर मारने की फ़ुरसत नहीं थी। लिहाजा वे 19 नवम्बर को गुड़गांव के निकट केएमपी रोड के उद्घाटन की जनसभा से ही तीर चलाकर बल्लभगढ़ में रखे इस कद्दू में तीर मारेंगे तो मेट्रो रेल का पहिया घूमेगा।

अब मोदी जी तीर मारकर इतना बड़ा करिश्मा करें और कोई तालियां पीटकर वाह मोदी जी वाह करने वाला न हो तो तीर मारने का का क्या लाभ। लिहाजा इस काम के लिए तमाम स्थानीय भाजपाई नेताओं के अतिरिक्त दिल्ली से भी एक केन्द्रीय मंत्री हरदीप पुरी भी यहां मजमा लगाने को खासताज़ेर पर आ रहे हैं। ताली बजाने वालों की भीड़ जुटाने का काम बेशक स्थानीय विधायवकों व सांसद का है परन्तु सारा श्रेय उन्हीं को तो अकेले नहीं दिया जा सकता, इसलिये पुरी को विशेष तौर पर यहां भेजा जा रहा है।

इस मजमेबाजी की तैयार में भाजपाइयों के अलावा पूरा जिला प्रशासन सप्ताह भर से लगा पड़ा है। लगभग रोजाना अफसरान बल्लभगढ़ मेट्रो स्टेशन के चक्कर लगा रहे हैं। उपायुक्त अतुल कुमार जिले भर के और कई काम कर रहे हैं या नहीं इसका तो पता नहीं परन्तु इस मजमें से जिले के तमाम अफसरों की मीटिंगे रोजाना चलती रहती हैं। अतिरिक्त उपायुक्त, तीनों एसडीएम, एस्टेट अफ्सर, सिटी मैजिस्ट्रेट, नगर निगम के अफ्सरों सहित सारे अधिकारियों को बाकायदा इस मजमे से डयूटियां समझा दी गयी हैं, उपायुक्त महोदय द्वारा किये जा रहे इतने बड़े काम का जनता को भी पता लगना चाहिये, इसके लिए डीपीआरओ; जिला लोक सम्पर्क अधिकारी द्वारा मीटिंग की फ़ोटों सहित कार्यवाही की पूरी रिपोर्ट तमाम मीडिया को भेजी गयी हैं। सरकारी संसाधनों को इससे बढ़िया दुरुपयोग और हो भी क्या सकता है?

यह सारा पांखड न भी किया जाये तो भी मेट्रो रेल कार्पोरेशन इस मार्ग पर अपनी गाड़ी बड़े आराम से चला सकते हैं। सारा झमेला वास्तव में श्रेय लेने के चक्कर में हो रहा है। परन्तु यह जनता है सब जानती है, किसने क्या किया है और किसको कितना श्रेय देना है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06